समाचार वाणी
ख़बर जो करें असर !

नाशिक | Wednesday, 26 August 2026

कथक की साधना से संस्कृति को नई पहचान दे रहीं श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल, 25 वर्षों से कला साधना मे संमर्पित जीवन

Sanket Morankar

Published on 11 Jul 2026

भारतीय शास्त्रीय नृत्य केवल एक कला नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा और आध्यात्मिक विरासत का जीवंत स्वरूप है। इस महान परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य कुछ समर्पित कलाकार अपने जीवन का उद्देश्य बना लेते हैं। ऐसी ही प्रेरणादायी हस्तियों में **श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल** का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। पिछले **25 वर्षों** से कथक नृत्य की साधना, शिक्षण और संस्कृति के संरक्षण में निरंतर सक्रिय श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल ने अपने अथक परिश्रम और समर्पण से हजारों विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य की शिक्षा देकर समाज में कला के प्रति नई चेतना जागृत की है।

वर्तमान में श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल **भारती कृष्णा विद्या विहार, नागपुर** में पिछले **15 वर्षों से डांस टीचर** के रूप में अपनी सेवाएं दे रही हैं। इसके साथ ही वे लगभग **25 वर्षों से कथक विशारद डिग्री कोर्स** का प्रशिक्षण प्रदान कर रही हैं। उनके मार्गदर्शन में अनेक विद्यार्थियों ने कथक की उच्च शिक्षा प्राप्त कर राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। उनकी शिक्षा केवल तकनीकी प्रशिक्षण तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वे विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति, अनुशासन, गुरु-शिष्य परंपरा और कला के नैतिक मूल्यों से भी जोड़ती हैं।

शिक्षा और कला का अद्भुत संगम

श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल का शैक्षणिक एवं कलात्मक सफर अत्यंत प्रेरणादायक रहा है। उन्होंने **बी.कॉम.** तथा **एलएल.बी.** की शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ अपने कला प्रेम को भी समान महत्व दिया। उन्होंने **कथक विशारद** की उपाधि प्राप्त की और आगे बढ़ते हुए **कथक मे मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स (MFA)** की डिग्री हासिल की, जिसमें वे **नागपुर विश्वविद्यालय की टॉपर** रहीं। इसके अतिरिक्त उन्होंने **मध्यमा पूर्ण (वोकल म्यूजिक)** की उपाधि भी प्राप्त की, जिससे भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य दोनों पर उनकी मजबूत पकड़ स्थापित हुई।

उनका मानना है कि एक उत्कृष्ट नृत्यांगना बनने के लिए संगीत और लय का गहरा ज्ञान होना आवश्यक है। यही कारण है कि उन्होंने नृत्य और संगीत दोनों क्षेत्रों में समान रूप से अध्ययन और साधना की।

25 वर्षों से कथक साधना और शिक्षण

श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल का जीवन भारतीय शास्त्रीय नृत्य के प्रति पूर्ण समर्पण का उदाहरण है। पिछले ढाई दशकों से वे कथक की शिक्षा देकर न केवल कलाकार तैयार कर रही हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को भी नई पीढ़ी तक पहुँचा रही हैं।

उनके प्रशिक्षण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता को पहचानकर उसके अनुरूप मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। उनके कई शिष्य आज विभिन्न सांस्कृतिक मंचों, विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा प्रतिष्ठित संस्थानों में अपनी कला का प्रदर्शन कर रहे हैं और स्वयं भी नृत्य प्रशिक्षक के रूप में कार्यरत हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर परीक्षक के रूप मे महत्वपूर्ण भूमिका

श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल की कला विशेषज्ञता और अनुभव को देखते हुए उन्हें **अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय, मुंबई** द्वारा **Examiner (परीक्षक)** की जिम्मेदारी सौंपी गई है। यह संस्था भारत की सबसे प्रतिष्ठित संगीत एवं नृत्य शिक्षण संस्थाओं में से एक मानी जाती है।

एक परीक्षक के रूप में वे विद्यार्थियों की प्रतिभा का निष्पक्ष मूल्यांकन करती हैं तथा उन्हें आगे बढ़ने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन भी प्रदान करती हैं। यह जिम्मेदारी उनकी कला में गहरी पकड़ और वर्षों के अनुभव का प्रमाण है।

प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं मे निर्णायक के रूप मे योगदान

श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल ने विभिन्न सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्थानों द्वारा आयोजित अनेक प्रतियोगिताओं में निर्णायक (Judge) के रूप में अपनी सेवाएं दी हैं। उन्होंने **सांसद क्रीड़ा महोत्सव** की लोकनृत्य प्रतियोगिता, **युवा रंगमंच – इंदिरा कॉलेज एवं नागपुर विश्वविद्यालय** की शास्त्रीय नृत्य प्रतियोगिता, **जिला परिषद कर्मचारी नृत्य प्रतियोगिता (यवतमाल)** सहित अनेक जिला एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं में निष्पक्ष निर्णायक की भूमिका निभाई है।

उनकी कला दृष्टि, निष्पक्ष निर्णय क्षमता और वर्षों का अनुभव उन्हें एक सम्मानित निर्णायक के रूप में स्थापित करता है।

'ICON of Central India 2025' से हुआ सम्मान

भारतीय शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान, उत्कृष्ट शिक्षण कार्य तथा कला संरक्षण के लिए श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल को वर्ष **2025** में प्रतिष्ठित **"ICON of Central India"** सम्मान से **"Master of Art"** श्रेणी में सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनके वर्षों की मेहनत, समर्पण और कला के प्रति निष्ठा का प्रमाण है।

नई पीढ़ी को संस्कृति से जोड़ने का संकल्प

श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल का मानना है कि आधुनिक समय में युवाओं को भारतीय संस्कृति और पारंपरिक कलाओं से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से वे बच्चों और युवाओं को कथक के माध्यम से भारतीय संस्कृति, संस्कार, अनुशासन और आत्मविश्वास का पाठ पढ़ाती हैं।

उनका प्रयास केवल एक नृत्य कलाकार तैयार करना नहीं, बल्कि ऐसे जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है जो अपनी संस्कृति पर गर्व करें और उसे आगे बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाएं।

समाज के लिए प्रेरणा

आज श्रीमती मीनल कसनारे पाटिल केवल एक कथक शिक्षिका नहीं, बल्कि कला, संस्कृति और शिक्षा के क्षेत्र में प्रेरणा का एक सशक्त उदाहरण हैं। उन्होंने यह सिद्ध किया है कि यदि समर्पण, निरंतर अभ्यास और सकारात्मक सोच हो तो कला के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।

उनकी उपलब्धियां न केवल नागपुर बल्कि पूरे महाराष्ट्र और देश के लिए गर्व का विषय हैं। आने वाले समय में भी वे भारतीय शास्त्रीय नृत्य की इस गौरवशाली परंपरा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने और युवा कलाकारों को प्रेरित करने का कार्य निरंतर करती

रहेंगी।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsover.